REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

हरियाणा में मुख्य पशुधन संसाधन – एक अध्ययन

डॉ. दीपक कुमार
सहायक–आचार्य, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज,
रेवाड़ी, (हरि0)

परिचय :

हरियाणा प्रदेश भारत के उत्तरी–पश्चिमी भाग में $27^{0}39^{1}$ उतरी अक्षांश से $30^{0}55^{1}$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^{0}28^{1}$ पूर्वी देशान्तर से $77^{0}36^{1}$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। हरियाणा राज्य के पूर्व में यमुना नदी उत्तर प्रदेश व हरियाणा की सीमा निर्धारित करती हुई बहती है। हरियाणा के पश्चिम व दक्षिण में राजस्थान विस्तृत है। दक्षिण–पूर्व में केन्द्रशासित राज्य दिल्ली है जिसके तीन और हरियाणा पड़ता है। हरियाणा भारत का भू–आप्वेश्ति राज्य है। जिसका क्षेत्रफल 44212 वर्ग किमी0 है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 1.34 प्रतिशत है। हरियाणा राज्य भारत का वह महत्वपूर्ण राज्य है जो न तो सागर तट को स्पर्श करता है और न ही किसी अन्तराष्ट्रीय सीमा को। हरियाणा राज्य का गठन सरदार हुकम सिंह के प्रयासो से पंजाब के पूर्नगठन के बाद 1 नवम्बर 1966 को हुआ था। हरियाणा राज्य बनने के बाद प्रथम जनगणना सन् 1971 में हुई थी इसके पश्चात प्रति दस वर्षों में जनगणना होती रही। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हरियाणा की कुल जनसंख्या 25351462 है जो देश की कुल जनसंख्या का 2.09 प्रतिशत है। राज्य के पूर्नगठन के समय 7 जिले थे जिसमें अम्बाला, करनाल, रोहतक, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, हिसार व जींद सम्मिलित थे। इसके पश्चात् समय–समय पर 12 नवीन जिलों का गठन किया गया जिसके फलस्वरुप जिलों की सीमाऐं बदलती रही व पूर्नगठित होती रही। 1 नवम्बर 1989 को हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में राज्य को चार जिले रेवाडी, कैथल, पानीपत व यमुनानगर उपहार स्वरुप मिले। 15 अगस्त 1995 को अम्बाला से पंचकुला व 15 अगस्त 1997 को हिसार से फतेहाबाद तथा रोहतक से झज्जर जिलों को पूर्नगठन किया गया इसी प्रकार 2 अक्टुबर 2004 को मेवात जिला बना, 15 अगस्त 2008 को पलवल व 18 सितम्बर 2016 को चरखी दादरी अस्तीतत्व में आया वर्तमान में हरियाणा में 22 (बाईस) जिले हैं। चण्डीगढ पंजाब व हरियाणा की सांझी राजधानी होने के साथ–साथ केन्द्रशासित प्रदेश भी है।

पशुधन :–

हरियाणा की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में पशुपालन का महत्वपूर्ण योगदान है। हरियाणा में पशुपालन विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की आय का दूसरा साधन है। हरियाणा हरा–भरा व वनों से अच्छादित राज्य रहा है यहाँ वर्तमान में भी गीदड़, खरगोश, लोमड़ी, नीलगाय व बाघ आदि पाऐ जाते है। ऐसा माना जाता है कि प्राचीन समय में कुरुक्षेत्र का पेहवा नामक स्थान हाथियों के लिए विख्यात था।

हरियाणा राज्य में पालतु पशुओं में गोधन, भैस, भेड़, बकरी, घोड़े एवं ट्टू, ऊँट, सूअर आदि पाले जाते है इसी के साथ कुत्ता, बिल्ली आदि भी छोटी बस्तियों में पाले जाते हैं। पशुपालन हरियाणा के महत्वपूर्ण व्यवसायों में एक हैं। हरियाणा प्रदेश में लगभग 85 प्रतिशत लोग कृषि कार्यो में संलग्न है साथ ही लोग कृषि के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय का कार्य भी करते हैं।

हरियाणा में कृषि कार्य हेतु बैल एवं ऊँट पाले जाते है सामान ढ़ोने के लिए घोड़ा एवं खच्चर बैल का प्रयोग किया जाता है वहीं दूध के लिए गाय, भैस, बकरियाँ आदि पाली जाती हैं हरियाणा की मूर्रा नस्ल की भैंस सारे भारत में प्रसिद्ध है इस नस्ल की भैस देखने में तो सुन्दर है ही साथ ही अन्य सभी नस्ल की भैसों से अधिक दूध भी देती हैं इसलिए बाजार में इसकी कीमत स्वाधिक है। हरियाणा में पाऐ जाने मुख्य पशुधन का जिलेवार अध्ययन निम्न तालिका से स्पष्ट है। मुख्य पशुधन निम्नलिखित है –

(क). गोधन। (ख). भैस।
(ग). भेडें। (घ). बकरी।

तालिका – 1
हरियाणा में प्रमुख पशुधन जिलेवार प्रतिशत (2012–2013)

जिले	गोधन	भैंस	भेड़	बकरी	घोड़े एवं ट्टू	ऊँट	सूअर	कुत्ते
अम्बाला	3.75	3.60	3.50	2.11	3.15	0.00	4.11	5.83
पंचकुला	1.33	1.13	0.96	2.22	0.58	0.25	1.10	2.39
यमुनानगर	6.49	3.58	2.73	2.74	3.78	0.00	3.57	4.44
कुरुक्षेत्र	5.15	3.66	2.76	1.28	3.85	0.00	2.77	3.82
कैथल	5.17	6.95	4.54	2.47	6.66	0.03	8.50	3.90
करनाल	8.29	5.87	4.16	3.14	8.07	0.50	7.14	5.78
पानीपत	3.03	4.03	1.90	1.46	4.11	0.01	4.68	1.67
सोनीपत	5.75	5.72	2.04	2.34	4.33	0.00	8.79	4.15
रोहतक	3.40	4.32	4.44	1.75	2.77	0.07	8.58	2.86
झज्जर	3.00	4.18	5.46	2.81	1.87	0.59	6.14	4.32
फरीदाबाद	1.95	1.99	0.79	3.16	0.70	0.04	3.32	4.82
पलवल	2.14	4.70	3.20	2.53	1.21	0.05	3.39	1.03
गुरुग्राम	3.22	2.51	0.67	3.13	3.02	0.48	4.36	13.11
मेवात	1.88	3.75	2.23	10.34	0.76	0.68	2.72	0.41
रेवाड़ी	2.45	3.48	2.39	6.29	1.47	5.32	2.11	3.52
महेन्द्रगढ़	2.79	4.28	6.72	14.81	2.21	19.05	1.18	4.27
भिवानी	7.20	8.62	13.86	13.79	5.25	28.67	6.70	8.51
जींद	6.58	8.28	7.73	2.79	5.63	0.54	8.60	2.13
हिसार	8.94	8.37	13.52	5.94	4.35	8.58	7.06	5.60
फतेहाबाद	5.56	5.29	4.75	3.51	4.19	9.76	3.93	5.31
सिरसा	11.85	5.64	11.55	11.30	3.61	25.29	1.14	12.02
कुल	100	100	100	100	100	100	100	100

स्त्रोत :– 19 वाँ पशुधन सेन्सस 2012 के आँकड़ों के आधार पर।

उपरोक्त तालिका के आधार पर पाऐ गऐ पशुधन का वर्णन निम्न प्रकार से है –

(क). गोधन :–

हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पशुधन व्यवसाय में गोधन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है गोधन में गाय, बछड़े व बैल आदि को शामिल किया गया है। गोधन से प्राप्त दूध का उपयोग विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ बनाने में किया जाता हैं वहीं इसके गोमूत्र के प्रयोग से अनेको दवाईयाँ बनाई जाती है छोटे बच्चों के लिए गाय का दूध हल्का व गुणकारी माना जाता हैं। गाय की हड्डियों से उत्तम उर्वरक प्राप्त किये जाते है। साथ ही उनकी खाल व चमड़ा उद्योग के लिए कच्चा माल भी प्राप्त किया जाता हैं। निम्नलिखित तालिका से हरियाणा

में गोधन की स्थिति को समझा जा सकता हैं। दुधारु नस्ल की गायों में साहीवाल, सिन्धी, थारपरकर तथा देवनी प्रमुख हैं। हरियाणा प्रदेश में साहीवाल नस्ल की गाय की कीमत सबसे अधिक पायी जाती हैं।

श्रेणी तालिका – 2
हरियाणा में गोधन का जिलेवार प्रतिशत (2012)

श्रेणी	गोधन प्रतिशत	सम्मिलित जिले
अति कम	3 से कम	पंचकुला, फरीदाबाद, पलवल, मेवात, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़।
कम	3 से 5	अम्बाला, पानीपत, रोहतक, झज्जर, गुरुग्राम।
मध्यम	5 से 7	यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, सोनीपत, जींद, फतेहाबाद।
अधिक	7 से अधिक	करनाल, भिवानी, हिसार, सिरसा।

स्त्रोत :– पशुधन सेन्सस 2012 के आँकड़ों के आधार पर स्वयं द्वारा परिकलित।

उपरोक्त श्रेणी तालिका से स्पष्ट है कि गोधन हरियाणा के सभी जिलों में पाया जाता है पंचकुला, फरीदाबाद, पलवल, मेवात, रेवाड़ी व महेन्द्रगढ़ में 3 प्रतिशत से भी कम गोधन पायी जाती हैं जिनका जिलेवार प्रतिशत क्रमशः 1.33,.1.95, 2.14, 1.88, 2.45, 2.79 हैं। उपरोक्त तालिका के अनुसार हरियाणा के 5 जिलों अम्बाला, पानीपत, रोहतक, झज्जर एवं गुरुग्राम में उसे 5 प्रतिशत गोधन पाया जाता है हरियाणा के पानीपत व गुरुग्राम जिलों में तो कृषि कार्य कम व औद्योगिक कार्य अधिक होते हैं इसलिए यहाँ के लोगों का अधिकांश झुकाव औद्योगिक क्षेत्रों में स्थाई अथवा अस्थाई नौकरी पाना रहा है। मध्यम श्रेणी (5 से 7 प्रतिशत) के अन्तर्गत हरियाणा के यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, सोनीपत, जींद व फतेहाबाद जिलों में गोधन प्रतिशत क्रमशः 6.49, 5. 15, 5.17, 5.75, 6.58, 5.56 पाया जाता।

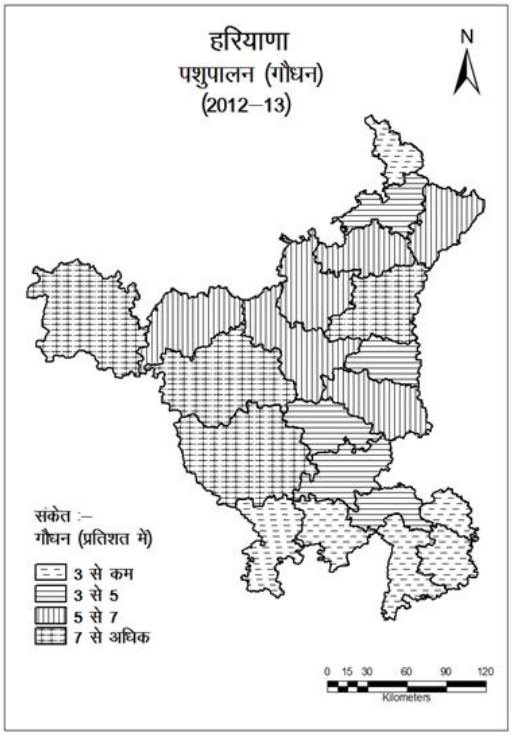

हरियाणा में सबसे अधिक गोधन (7 प्रतिशत से अधिक) करनाल (8.29), भिवानी (7.20), हिसार (8.94) तथा सिरसा (11.85) आदि जिलों में पाया जाता है।

(ख). भैंस :–

हरियाणा की मूर्रा नस्ल की भैंस देशभर में प्रसिद्ध है। यह अन्य सभी नस्लो की भैंसो से अधिक दूध देती है रेवाड़ी जैसे जिले में मूर्रा नस्ल की भैंसों को विकसीत करने के लिए कृत्रिम गर्भधान केन्द्र की व्यवस्था की गई है। वहीं हरियाणा राज्य में जींद जिला मूर्रा नस्ल की भैंसो के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। इस जिले में भैंसे तैयार की जाती है। हरियाणा में पशुपालकों को उच्च कोटी की मूर्रा नस्ल की भैंस पालने के लिए एक योजना बनाई गई है जिसके अन्तर्गत प्रति भैंस 1000 रुपये से 6000 रुपये तक की प्रोत्साहन राशी दी जाती है हरियाणा पशुधन विकास बोर्ड उच्च कोटी की मूर्रा नस्ल के भैंसों के कटड़ों को खरीद कर उनका पोषण करता है। अब तक लगभग 800 झोटे विभिन्न पंचायतों को दिऐ जा चूके है। मूर्रा भैंसो को हरियाणा में 'काला सोना' कहा जाता है। हरियाणा में भैंसों की जिलेवार स्थिति को निम्न श्रेणी तालिका से देखा जा सकता है।

श्रेणी तालिका – 3
हरियाणा में भैंस का जिलेवार प्रतिशत (2012)

श्रेणी	भैंस जिलेवार (प्रतिशत में)	सम्मिलित जिले
कम	3 से कम	पंचकुला, फरीदाबाद, गुरुग्राम।
मध्यम	3 से 5	अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, पानीपत, रोहतक, झज्जर, पलवल, मेवात, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़।
अधिक	5 से 7	कैथल, करनाल, सोनीपत, फतेहाबाद, सिरसा।
अत्यधिक	7 से अधिक	भिवानी, जींद, हिसार।

स्त्रोत :– पशुधन सेन्सस 2012 के आँकडों के आधार पर स्वयं द्वारा परिकलित।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि हरियाणा में 3 प्रतिशत से कम भैंसे पंचकुला, फरीदाबाद, व गुरुग्राम में पायी जाती है। उपरोक्त तीनों जिलों में पंचकुला जिला एक प्रशासनिक नगर है जहाँ हरियाणा सरकार के प्रशासन सम्बन्धित कार्यो के मुख्य ऑफिस यहीं बने हुए है जिससे यहाँ पर पशुपालन सम्बन्धित कार्य न के बराबर होता हैं वहीं दूसरी और गुरुग्राम एवं फरीदाबाद हरियाणा के प्रमुख औद्योगिक नगरों में शामिल किये जाते हैं जहाँ लोग

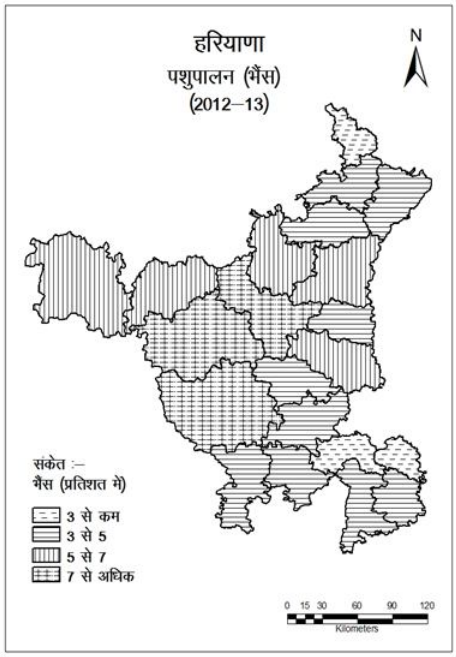

अनेको छोटे–बड़े उद्योग लगे हुऐ है अधिकांश व्यक्ति यहाँ पर अकृषित कार्यों में संलग्न है। यही कारण हैं कि हरियाणा के उपरोक्त जिलों में 3 प्रतिशत से भी कम भैंसे पाली जाती है। हरियाणा की मध्यम श्रेणी (3 से 5 प्रतिशत) में अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, पानीपत, रोहतक, झज्जर, पलवल, मेवात, रेवाड़ी व महेन्द्रगढ़ आदि दस जिलों को शामिल किया गया है। वहीं कैथल, करनाल, सोनीपत, फतेहाबाद व सिरसा आदि जिलों में अधिक (5 से 7) भैंसों का प्रतिशत पाया जाता है। जो क्रमशः 6.95, 5.87, 5.72, 5.29, 5.64 प्रतिशत है। हरियाणा में सबसे अधिक भैंसों का जिलेवार प्रतिशत भिवानी (8.62), जींद (8.28), हिसार (8.97) आदि में पाया जाता है जींद जिले में मूर्राह नस्ल की अच्छी भैंसे तैयार की जाती है वहीं हिसार जिला पशुधन मामलों में बड़ा अग्रणी है भिवानी जिलों में दुधारु भैंसों की प्रतियोगिता करवाई जाती है सबसे अधिक दूध देने वाली भैंसों को इनाम तक दिया जाता है।

(ग). भेडें –

हरियाणा के पशुधन व्यवसाय में भेडों का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान हैं। भेडों से ऊन तथा मॉस प्राप्त किया जाता हैं। भेडों को चारा खिलाने कि लिए विशेष इन्तजाम की आवश्यकता नहीं होती। चरवाहे खाली खेतो में इन्हें चराने के लिए ले जाते है जहाँ ये अपना भोजन वहीं खाली खेतो में घास–भूस आदि खाकर पूरा कर लेती है। हरियाणा में भेडों का जिलेवार अध्ययन निम्न श्रेणी तालिका में देखा जा सकता है।

श्रेणी तालिका – 4
हरियाणा में भेड जिलेवार प्रतिशत (2012)

श्रेणी	भेड जिलेवार (प्रतिशत में)	सम्मिलित जिले
कम	1 से कम	पंचकुला, फरीदाबाद, गुरुग्राम।
मध्यम	1 से 4	अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, पानीपत, सोनीपत, पलवल, मेवात, रेवाड़ी।
अधिक	4 से 8	कैथल, करनाल, रोहतक, झज्जर, महेन्द्रगढ़, जींद, फतेहाबाद।
अत्याधिक	8 से अधिक	भिवानी, हिसार, सिरसा।

स्त्रोत :– पशुधन सेन्सस 2012 के आँकडों के आधार पर स्वयं द्वारा परिकलित।

उपरोक्त तालिका के अनुसार हरियाणा के एक प्रशासनिक एवं दो औद्योगिक जिलों में भेडों का जिलेवार प्रतिशत 1 से भी कम है। अम्बाला, कुरुक्षेत्र, यमुनानगर, पानीपत, पलवल, सोनीपत, मेवात व रेवाड़ी जिलों में मध्यम श्रेणी (1 से 4 प्रतिशत) भेड प्रतिशत पाया जाता है। जो क्रमशः 3.50, 2.76, 2.73, 1.90, 3.20, 2.04, 2.23, 2.39 प्रतिशत है। हरियाणा में भेडों के जिलेवार प्रतिशत में कैथल, करनाल, रोहतक, झज्जर, महेन्द्रगढ, जींद, फतेहाबाद आदि सात जिलों में 4 से 8 प्रतिशत के मध्य भेडें पाली जाती है। हरियाणा में सबसे अधिक भेडें भिवानी (13.86 प्रतिशत), हिसार (13.52 प्रतिशत) व सिरसा (11.55 प्रतिशत) आदि जिलों में पाली जाती हैं। भिवानी में सन् 1972 में सघन पशु विकास परियोजना आरम्भ की गई थी जिसके अन्तर्गत 13 भेड एवं उन विस्तार केन्द्रों को स्थापित किया गया था वहीं सिरसा में भी 9 भेड़ एवं उन विस्तार केन्द्र स्थापित किऐ गऐ है। हिसार में भी 11 भेड़ एवं उन विकास केन्द्र प्रयोगशाला स्थापित कि गऐ है। हिसार में भी 11 भेड़ एवं ऊन विकास केन्द्र प्रयोगशाला स्थापित कि गई है जिसके कारण इन जिलों में भेड पालन प्रतिशत में बढ़ोतरी हुई है। पशुधन आंकडे 2019 के अनुसार हरियाणा राज्य में 2.72 लाख भेडें है।

(घ). बकरी :–

हरियाणा में बकरी पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहे तो गलत नहीं होगा क्योंकि इस पशु की कोई विशेष देखभाल करने की आवश्यकता नहीं होती है। इससे अनेक प्रकार की वस्तुऐं प्राप्त होती है। जैसे – दूध, बाल, चमड़ा, माँस आदि सभी प्रकार से लाभदायक है। बकरी पालन–पोषण में थोड़ी बहुत सावधानी रखने से ही ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त किया जा सकता है। बकरी का दूध अनेक बिमारियों में लाभदायक माना जाता है। बकरी के दूध का उपयोग गले के घाव, डेंगु मरीजो, पेट की बिमारियों आदि को दूर करने के लिए विशेष रुप से दवाई का काम करता है। बकरी के दूध से विभिन्न प्रकार के व्यंजन भी बनाऐ जाते है जिसमें पनीर, दही, रसगुल्ला, घी, खोया आदि शामिल है। हरियाणा में गरीब किसान बकरी पालकर अतिरिक्त कमाई भी कर लेते है इसलिए इसे गरीब की गाय कहा जाता हैं। मरने के बाद भी बकरी के विभिन्न अंगो को इक्कठा कर उनका उपयोग दवाई बनाने में किया जाता है।

निम्न श्रेणी तालिका में हरियाणा में जिलेवार बकरी प्रतिशत दिखाया गया है।

श्रेणी तालिका – 5
हरियाणा में बकरी प्रतिशत (2012)

श्रेणी	बकरी (प्रतिशत में)	सम्मिलित जिले
कम	3 से कम	अम्बाला, पंचकुला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, झज्जर, जींद, पलवल।
मध्यम	3 से 6	करनाल, फरीदाबाद, गुरुग्राम, फतेहाबाद, हिसार।
अधिक	6 से अधिक	मेवात, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, भिवानी, सिरसा।

स्त्रोत :– पशुधन सेन्सस के आँकडों के आधार पर स्वयं द्वारा परिकलित।

उपरोक्त श्रेणी तालिका से स्पष्ट है कि हरियाणा के ग्यारह जिलों में क्रमशः अम्बाला, पंचकुला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, झज्जर, जींद व पलवल में 3 प्रतिशत से कम बकरियाँ पाली जाती हैं वहीं 3 से 6 प्रतिशत के अन्तर्गत करनाल, फरीदाबाद, गुरुग्राम, फतेहाबाद व हिसार आदि जिलों को शामिल किया जाता है। जहाँ क्रमशः 3.14, 3.16, 3.13, 5.51, 5.94 प्रतिशत बकरियाँ पाली जाती है। हरियाणा में सबसे अधिक (6 प्रतिशत से अधिक) बकरीयाँ मेवात (10.34 प्रतिशत), रेवाड़ी (6.29 प्रतिशत), महेन्द्रगढ़ (14.81 प्रतिशत), भिवानी (13.79 प्रतिशत) व सिरसा (11.30 प्रतिशत) आदि जिलों

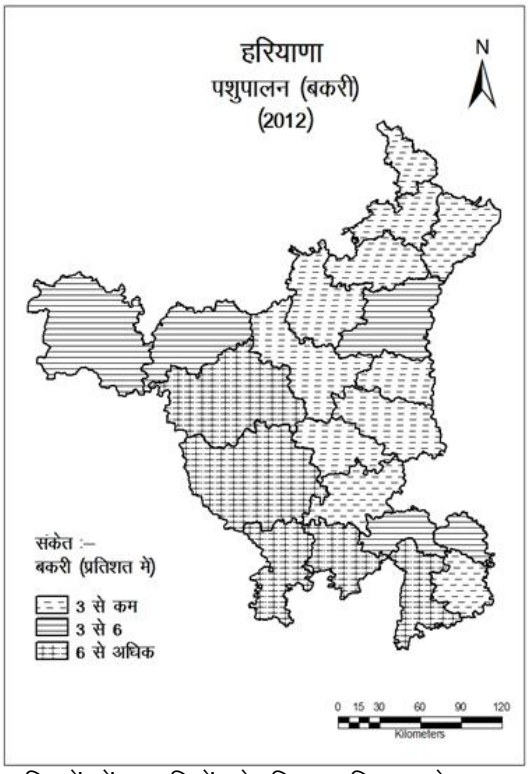

में पाली जाती है। उपरोक्त इन जिलों में बकरियों के लिए उचित चारे व खुले खेतों कि सुविधा उपलब्ध हो जाती है यहाँ पर बकरियों कि जरुरत छोटे किसान अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुप्ता आर. (2005) यू.जी.सी. नेट भूगोल, रमेश पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली।
2. खुल्लर डी.आर. (2001) भारत का भूगोल एवं प्रयोगात्मक भूगोल, सरस्वती हाऊस (प्रा.) लि. दिल्ली।
3. गोतम अलका (2007) शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद –2
4. बंसल शुरेश चन्द्र (2013) भारत का वृहद भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
5. बंसल शुरेश चन्द्र (2013) भारत का वृहद भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
6. हारुन मोहम्मद (2009) संसाधन भूगोल, वसुन्दरा प्रकाशन, गोरखपुर।

डॉ. दीपक कुमार
सहायक–आचार्य, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी (हरि0)